International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

**सतीश गावण्डे**
शोधार्थी, शिक्षा संकाय
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल
**डॉ. आलोक शर्मा**
प्राचार्य, आयुषमति कॉलेज ऑफ एजुकेशन, भोपाल

**प्रस्तुत शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राएँ) का चयन कर उन पर 'आत्मप्रत्यय प्रश्नावली' का प्रशासन किया गया। प्राप्त परिणामों के अनुसार छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक एवं शैक्षिक आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया जबकि सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।**

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करने के साथ ही, उनमें उत्तम चारित्रिक एवं नैतिक गुणों का विकास करना भी है। विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का निर्धारण करने में अनुवांशिकता एवं वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। व्यक्ति अपनी अनुवांशिकता में परिवर्तन नहीं कर सकता परंतु वह अपने वातावरण को स्वयं के अनुकूल बना सकता है। विभिन्न शोध अध्ययनों द्वारा भी यह सिद्ध किया जा चुका है कि व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले कारकों में पारिवारिक वातावरण व विद्यालयीन परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि विद्यार्थियों को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण मिलता है, तो उनमें प्रेम, स्नेह, दया, शिष्टाचार व कर्तव्यपालन जैसे गुणों का विकास होता है, और उनका व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है, साथ ही सकारात्मक विद्यालयीन परिवेश उनमें उत्तम नागरिक गुणों के विकास में सहायक होता है। जिससे उसमें स्वयं अनुकरण के द्वारा उच्च कोटि के व्यक्तित्व का विकास हो सके, यदि व्यक्तित्व विकास सकारात्मक दिशा में होगा तो आत्म–प्रत्यय भी उच्च कोटि का विकसित होगा, क्योंकि आत्म–प्रत्यय व्यक्तित्व का केन्द्र बिन्दु होता है।

प्रस्तुत शोध में लिंग स्वतंत्र चर हैं। अतः यह जानना आवश्यक है कि वर्तमान समय में शिक्षा के प्रचार व प्रसार के कारण समाज के दृष्टिकोण में आने वाले परिवर्तनों के कारण छात्र–छात्राओं का व्यक्तित्व व चरित्र किस तरह निर्मित हो रहा है तथा इसके फलस्वरूप लिंग भिन्नता के कारण आत्मप्रत्यय किस प्रकार प्रभावित हो रहा है, उपरोक्त बातों का अध्ययन करना बहुत ही सामयिक प्रतीत हो रहा है। अतः उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान समस्या का चयन शोधकार्य हेतु किया गया है।

प्रस्तुत शोध से संबंधित पूर्व में भी कुछ शोध कार्य किये गये हैं जैसे – **बनई, कोत्सु (1992)** ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र–छात्राओं के आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया। **कल्याणी, देवी टी. एवं माधुरी लता बी. (2004)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि किशोरावस्था के विद्यार्थियों के आत्मप्रत्यय में लिंग भिन्नता नहीं पाई गई। **चक्रवती, पी.के. एवं बनर्जी, देवश्री (2005)** ने अपने अध्ययन में पाया कि छात्र एवं छात्राओं के आत्मप्रत्यय में अंतर पाया गया तथा छात्रों में, छात्राओं की तुलना में उच्च आत्मप्रत्यय पाया गया। **डेविड, अलका एवं खान, शमीम (2010)** ने अपने अध्ययन में पाया कि बालिकाओं का आत्मप्रत्यय, बालकों की तुलना में उच्च पाया गया। **चौधरी, स्वाती (2011)** ने अपने अध्ययन के निष्कर्षतः पाया कि छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय में लिंग भेद पाया गया एवं छात्राओं का आत्मप्रत्यय, छात्रों की तुलना में उच्च पाया गया। **श्रीवास्तव, नीलम एवं चौधरी, स्वाती (2012)** के अध्ययन से ज्ञात हुआ कि आत्मप्रत्यय में लिंग भिन्नता नहीं पाई जाती है।

**उद्देश्य :–**

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**परिकल्पना :–**

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

**उपकरण :–**

आत्म–प्रत्यय प्रश्नावली – डॉ. राजकुमार सारस्वत

**विधि :–**

सर्वप्रथम बैतूल जिले में स्थित माध्यमिक स्तर के चार विद्यालयों की कक्षा नवमीं एवं दसवीं में अध्ययनरत् 200 विद्यार्थियों (100 छात्र एवं 100 छात्राऐं) का चयन साधारण यादृच्छिक विधि द्वारा कर उन पर 'आत्मप्रत्यय प्रश्नावली' का प्रशासन किया गया एवं प्राप्तांकों के आधार पर मास्टर शीट तैयार की गई। मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात परीक्षण के द्वारा आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तथा प्राप्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष निकाले गये।

## परिणामों का विश्लेषण :–

**परिकल्पना :** माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

## तालिका

माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय संबंधी तुलनात्मक परिणाम

| आत्म–प्रत्यय के घटक | सामाजिक–आर्थिक स्तर | संख्या | मध्यमान | मानक विचलन | क्रांतिक अनुपात मान | 'पी' मान |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शारीरिक | उच्च | 100 | 26.91 | 8.07 | 2.21 | < 0.05 |
| | निम्न | 100 | 24.43 | 7.73 | | |
| सामाजिक | उच्च | 100 | 27.78 | 8.17 | 1.70 | > 0.05 |
| | निम्न | 100 | 25.84 | 7.94 | | |
| स्वभावगत | उच्च | 100 | 25.10 | 7.52 | 0.78 | > 0.05 |
| | निम्न | 100 | 24.28 | 7.33 | | |
| शैक्षिक | उच्च | 100 | 26.40 | 8.17 | 2.34 | < 0.05 |
| | निम्न | 100 | 29.12 | 8.18 | | |
| नैतिक | उच्च | 100 | 29.07 | 8.17 | 0.84 | > 0.05 |
| | निम्न | 100 | 28.04 | 9.01 | | |
| बौद्धिक | उच्च | 100 | 25.32 | 6.95 | 0.92 | > 0.05 |
| | निम्न | 100 | 24.42 | 6.91 | | |
| समग्र | उच्च | 100 | 160.59 | 42.50 | 0.73 | > 0.05 |
| | निम्न | 100 | 156.14 | 43.25 | | |

स्वतंत्रता के अंश – 198 0.05 स्तर के लिये निधारिंत न्यूनतम मान – 1.97

उपरोक्त सारणी में प्रदर्शित परिणामों से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक व शैक्षिक आत्मप्रत्यय में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 2.21, 2.34 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षाकृत अधिक हैं जबकि माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र आत्मप्रत्यय में सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक अंतर नहीं है, क्योंकि इनके लिए प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 1.70, 0.78, 0.84, 0.92, 0.73 स्वतंत्रता के अंश 198 पर सार्थकता के 0.05 स्तर के लिये निर्धारित न्यूनतम मान 1.97 की अपेक्षाकृत कम हैं।

अतः उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक व शैक्षिक आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्रों में शारीरिक आत्मप्रत्यय, छात्राओं से बेहतर पाया गया जबकि छात्राओं में शैक्षिक आत्मप्रत्यय, छात्रों से बेहतर पाया गया। छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

अतः उपरोक्त परिणामों के परिप्रेक्ष्य में पूर्व में ली गई परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के छात्र व छात्राओं के आत्मप्रत्यय (शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षिक, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र) में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा'', आंशिकतः अस्वीकृत की जाती है।

**निष्कर्ष :–**

छात्र एवं छात्राओं के शारीरिक व शैक्षिक आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर पाया गया तथा छात्रों में शारीरिक आत्मप्रत्यय, छात्राओं से बेहतर पाया गया जबकि छात्राओं में शैक्षिक आत्मप्रत्यय, छात्रों से बेहतर पाया गया। छात्र एवं छात्राओं के मध्य सामाजिक, स्वभावगत, नैतिक, बौद्धिक एवं समग्र आत्मप्रत्यय में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

## // संदर्भ ग्रंथ सूची//


1. गुप्ता, एस. पी. (2005) ''सांख्यिकीय विधियां'', शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. भार्गव, महेश (1997) ''आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन'', हर प्रसाद भार्गव, 4/230 कचहरी घाट, आगरा, ग्यारहवां संस्करण
3. सिंह, अरूण कुमार (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान'', भारती भवन पब्लिशर्स, पटना
4. वालिया, जे.एस. (2005) ''शिक्षा मनोविज्ञान की बुनियादें'', पाल पब्लिशर्स, जालंधर
5. **Banui, Kuotsu (1992)** *A study of the values of college students in Nagalend in relation to there self-concept*, Ph.D. Edu. North-Eastern Hill Univ. In Fifth Survey of Educational research (1988-92) Vol. - II, Pg. No. 1334.
6. **Chaudhri, Swati (2011)** *To Study of effect of the Self-concept, attitude towards education and socio-economic status on academic achievement of rural and urban senior-secondary students of Bhopal District*, Unpublished Ph.D. Education B.U. Bhopal.
7. **Chauhan, S.L. (1982)** *Sociometric Correlates of Self-Concept*, Ph.D. Edu., Aagra. U., In Third Servey of Research in Education (1978-1983) Pg. No. 339.
8. **Shrivastav, Neelam and Choudhary, Swati (2012)** *A Study of Self-Concept, Personality and Moral Values of Adolescent.* Research Scapes, Volume 1, Issue - 3, July-September 2012, Page No. 100-102.
9. **डेविड, अलका एवं खान, शमीम (2010)** *विभिन्न आर्य वर्ग के पारिवारिक वातावरण के पूर्व किशोरावस्था के बालक/बालिकाओं में आत्मप्रत्यय के प्रभाव का अध्ययन,* Research Hunt, Vol - V, Issue VI July-Aug 2010, Pg. No. 67-68.
10. **तिवारी, सुषमा एवं लता, सुमन (2000)** *बालक के व्यक्तित्व निर्माण में गृह वातावरण का प्रभाव,* प्राईमरी शिक्षक, अक्टूबर 2000, पृष्ठ क्रमांक 54–57